

मौत से पहिले- बे मौत होती
लगे लोड़ने क्यों ? जिन्दगी के मौती ^{sss 11211}

धरती- आकाश और पाताल में डेरा डाला
रो उठी सृष्टि नहीं- कोई भी सुनने वाला
दृढ़- आँसुओं से- दामन भिगोती-....

लगे लोड़ने-....

कभी तो देख लिया होता- इन्हीं आँखों से
कि मौत मचल उठी है- हर एक साखों से
सौत शबनम के आँसू- पिरोती-...

लगे लोड़ने-....

खेल ही खेल में, तुम जाने कहाँ- खो बैठे
जान की परवा नहीं- काल को दिल- दे बैठे
बेकशी- खुद की बेवशी- पे-रोती

लगे लोड़ने-....

युगों- युगों से, ब्रम्ह जिसकी- करे रखवाली
पिला जहर- वसुन्धरा को- न- मरने वाली
खेती- जहरों से, युक्त- बीज बोती

लगे लोड़ने-....

क्यों झूठी-शान में आकर के-इतना कर डाला
 ढेर-बारुद के, हर दिल में-जली है ज्वाला
 आग मरघट की चैन से न सोती

लगे लोड़ने ----

रेंसी-रेवा-न मिलेगी सुनो-ओ दीवानो
 धिनौने खेल न खेलो-अरे ओ अंजानो
 कई जन्मों के, पाप ये धोती

लगे लोड़ने ----

भक्ति से ज्ञान मिला-ज्ञान से करो भक्ति
 क्या दुनियाँ भूल-गई सत्य-धर्म की शक्ति
 न-बुझेगी "श्री बाबा श्री" ज्ञान ज्योति

लगे लोड़ने... मौत से ----

गर तेरी चेतना-जो न चेती
 मौत से पहिले बे-मौत होती...
 लगे लोड़ने क्यों ? जिन्दगी के मोती